करामात

जब कोई अनोखी या अनहोनी घटना घटती है तो उसे 'कौतुक' या **'करामात'** कहा जाता है।

इस विषय को स्पष्ट करने के लिए, निम्नलिखित पहलुओं पर विचार करने की आवश्यकता है—

1. हमारी मानसिक अवस्था।
2. प्राकृतिक कौतुक या इलाही करामात।
3. दिमागी शक्ति के करिश्में।
4. मानसिक शक्ति के करिश्में।
5. आत्मिक—शक्ति के करिश्में।

1. हमारी मानसिक अवस्था—हमारी मानसिक अवस्था के अनुसार हम पर बाहरी अचम्भों या **'करामात'** का प्रभाव पड़ता है।

बच्चा जन्म के बाद जब आँखें खोलता है तो उसे आस—पास का सारा दृश्य नवीन व **अनोखा प्रतीत** होता है तथा उसके चेहरे पर हैरानी या अचम्भे वाली अवस्था दिखाई देती है। इस का कारण यह है कि उसके मन की 'फिलम' (film) बिल्कुल कोरी होती है तथा वह भोला—भाला होता है। उसकी मानसिक **'फिल्म'** पर जो प्रथम **अक्स** पड़ता है, वही उसे नवीन, अनोखी, आश्चर्यजनक 'करामात' प्रतीत होती है। कुछ समय उपरांत बच्चे की उस दृश्य से **जान—पहचान** हो जाती है। फिर वही **'दृश्य'** उसके लिए नवीन या **अनोखा नहीं रहता** तथा वह हैरान नहीं होता।

इसी प्रकार पिछड़े हुए स्थानों पर जब पहले—पहल लालटेन, साईकल, मोटर, बिजली, रेल—गाड़ी, हवाई—जहाज आदि गए तो यह **नवीन, अनोखे दृश्य** वहां की जनता को आश्चर्यजनक, **'करामात'** प्रतीत हुए। आजकल विज्ञान की इतनी उन्नति हो गई है कि नित्य नवीन 'आविष्कार' हो रहे हैं जो हमारी साधारण बुद्धि

को नवीन, अनोखे, आश्चर्य – चकित करने वाले कौतुक या करामात प्रतीत होते हैं। परन्तु धीरे – धीरे जब हमारी वृत्ति इन 'दृश्यों' की **'आदी'** हो जाती है तो वही 'दृश्य' हमें साधारण प्रतीत होने लगते हैं।

2. **प्रकृति के इलाही कौतुक** – प्रकृति में, इलाही 'हुकुम' अनुसार नित्य – प्रति, पल – पल अनगिनत अनोखे कौतुक या करामात घटते रहते हैं, परन्तु इन्हें अपने दैनिक जीवन में घटता देखने के, हम इतने **'आदी'** हो जाते हैं कि इनका घटना, हमें साधारण लगता है और इनमें हमें कोई 'अनोखा – पन' या कौतुक प्रतीत नहीं होता।

इसके अतिरिक्त हमारे मन पर **'मायिकी रंगत की परत'** इतनी गहरी चढ़ी हुई है कि हम इन सूक्ष्म प्राकृतिक **'कौतुकों'** को समझने, विचार करने तथा अनुभव करने में **असमर्थ** हो गए हैं।

उदाहरण स्वरूप गुलाब के पौधे के अंकुरित होने से लेकर 'फूल' के खिलने तक, अनेक प्राकृतिक कौतुक घटते हैं। इसकी टहनियां और पत्तियां विशेष प्रकार की बनी होती हैं तथा उनके बचाव के लिए कांटे निकलते हैं। तत्पश्चात कलियाँ लगती हैं। यह कलियां जब बढ़ती हुई यौवन पर आती हैं तो खिल जाती हैं। इस प्रकार 'फूल' का **अस्तित्व** बनता है परन्तु फूल के अनोखे और **मनमोहक 'अस्तित्व' को तैयार करने में** प्रकृति ने –

कितनी शक्ति व्यय की
कितनी सयानप लगाई
कितना श्रम लगाया
कितनी रक्षा की
कितनी परवरिश की
कितना इंतज़ार किया।

इन सब के सम्बंध में हमें **सोचने, विचार करने की** फुरसत अथवा आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती।

यह फूल हमें मनमोहक रंग, अनोखी कोमलता, मनमोहक सौन्दर्य, मीठी महक प्रदान करता है।

परन्तु इसके अंदरूनी अचम्भित करने वाले कुदरती **कौतुकों की कीमत तो क्या डालनी थी,** हम तो इसके उपरोक्त बाहरी गुणों का **आनंद उठाने से भी** बे – परवाह हैं।

इतना ही बस नहीं। गुलाब के फूल को हम अपने स्वार्थ के लिए तोड़ कर **सजावट के लिए प्रयोग करते हैं,** या तोड़–मरोड़ कर **पैरों तले रौंदते हैं,** और इस प्रकार फूल को उसकी **'माँ–रूपी'** टहनी से तोड़ कर **अलग कर देते हैं।** इसके अतिरिक्त बहुत से फूलों को उबाल कर उनका **अर्क** (essence)**निकाल कर** अपने स्वार्थ के लिए **बेचते हैं।**

इतने जुल्म व कठिनाईयां सहने के बावजूद भी, फूल कोई **रोष नहीं करता,** अपितु अपने पर **अत्याचार करने वाले व्यक्तियों को भी,** कुरबानी देकर अपनी अनोखी, बहुमूल्य **सुगंधि** देता रहता है और कभी शिकायत नहीं करता।

इस प्रकार फूल चुप–चाप ही, अपने 'रहन–सहन' द्वारा, हमें गुरबाणी का **उपदेश सिखा रहा है–**

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ।। (पृ. १३८२)

'गुलाब', ऊँच–नीच, पापी–पुनी, अमीर–गरीब के साथ किसी प्रकार का **पक्षपात नहीं करता।** सभी को **इकसार** अपनी सुगंधि, **सहज–स्वभाव, अनजाने, चुप–चाप, गुप्त रूप में ही, प्रदान करता रहता है।** इस प्रकार अपने जीवन के **'रहन–सहन'** द्वारा गुरबाणी के निम्न उपदेशों का **पालन** कर रहा है तथा इन उपदेशों का **बिना–बोले ही प्रचार कर रहा है–**

मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ।। (पा. १०)

सद बखसिंदु सदा मिहरवाना सभना देइ अधारी।। (पृ. ७१३)

कउड़ा बोलि न जानै पूरन भगवानै अउगणु को न चितारे।। (पृ. ७८४)

ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा।। (पृ. २७३)

परन्तु हमारा मन माया के **'जंग'** द्वारा इतना **कठोर** हो गया है कि प्रकृति के **एक कण मात्र** 'गुलाब' की **'मूक–जीवन–कथा'** को समझने, बूझने, विचार करने या अनुभव करने में भी **असमर्थ** है, तथा इन उपदेशों का **पालन तो क्या करना था,** फूल **द्वारा प्रदान इलाही बख्शिशों,** रंगत, कोमलता, सौन्दर्य तथा सुगन्धि का **'आनंद उठाने'** से भी **'वंचित' जा रहे हैं।** इसके बावजूद हम अपनी अक्ल, चतुराई, ज्ञान के मायिकी बड़प्पन में **'भद्र–पुरुष'** बन कर **घमण्डी बने फिरते हैं।**

क्या गुलाब के फूल की यह **'जीवन कथा' इलाही कौतुक व आश्चर्यजनक करामात का सच्चा–सुच्चा प्रकटाव नहीं है?**

इसी प्रकार एक और अचम्भित करने वाला उदाहरण **'मनुष्य' का अस्तित्व है।**

एक **'कण'** से मनुष्य की **'हस्ती'** बनती है और जिस प्रकार–

1. मां के उदर में बच्चे का **'गर्भ धारण'** होता है।

2. मां के उदर में बच्चे को **पोषण मिलता** है।

3. मां के उदर में बच्चे के शरीर के **सभी अंग बनते हैं।**

4. बच्चे में **'जीवन–रौं'** प्रवेश करती है।

5. बच्चे में 'माँ–बाप' के सभी शारीरिक व मानसिक **'तत्वों' का प्रतिबिम्ब पड़ता है।**

6. मां के उदर की 'जठर–अग्नि' में 9 मास बच्चा **कैद रहता है।**

7. बच्चे का **कोमल मासपिंड** मां के **'उदर के निचले हिस्से'** में **'उल्टा' लटका रहता है।**

तत्पश्चात बच्चा पैदा होने पर, उसके शरीर के विकास के लिए–

1. मां के वक्ष में **दूध आ जाता है।**

2. थोड़ा बड़े होने पर मां के दूध के अतिरिक्त खुराक खाने के लिए **दाँत निकल आते हैं।**

3. आयु अनुसार बच्चे का शरीर, बोली, बुद्धि आदि **विकसित होते जाते हैं।**

4. यौवन में विषय–विकारों की **रंगत चढ़ती जाती है।**

5. अहम् के भ्रम–भुलाव में **'मैं, मेरी'** के प्रभाव अधीन **कर्म करता और फल भोगता है।**

6. अन्त में **बूढ़ा होकर** सभी **अंग 'जर्जर' हो जाते हैं तथा मृत्यु आ जाती है।**

ईश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया है, और इसे अपनी अनंत शक्तियां प्रदान की हैं। जिनके द्वारा मनुष्य शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक **स्तर पर अनंत उन्नति कर सकता है।** इस उन्नति की कोई सीमा नहीं है, यहां तक कि

मनुष्य में प्रवृत्त **'ज्योति'** परमेश्वर की **'अगम्य ज्योति'** में **'विलीन'** होकर, परमेश्वर का ही **स्वरूप बन सकती है।**

मनुष्य की उपरोक्त वर्णित, **'जीवन–कथा'** तथा इसकी उन्नति के लिए **असीमित विशाल 'विरासत'**, अपने आप में **एक अलौकिक अचम्भा तथा आश्चर्यजनक करामात है।**

इसी प्रकार प्रकृति के 'कण–कण' की भिन्न–भिन्न गुप्त जीवन–कथाएं भी इलाही **कौतुक और करामातों के प्रकाश या प्रकटाव के जीवत 'उदाहरण' हैं।**

यह प्राकृतिक कौतुक एवम् करामात, प्रतिक्षण, पल–पल हमारे आस–पास **सदा घटती रहती हैं** तथा **प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रही हैं।**

परन्तु हम इनसे **बे–परवाह, अनभिज्ञ, ढीठ तथा अभ्यस्त हो चुके हैं।**

इनके–

रहस्यमयी दर्शन
आश्चर्यजनक कौतुक
विस्मादी अचम्भे
करामातों
मनमोहक–सौन्दर्य

को **बूझने–पहचानने, अनुभव करने का** हमें, ख्याल ही नहीं आता, चाव ही नहीं तथा आवश्यकता ही नहीं।

इस प्रकार हम **अपनी ही लापरवाही तथा ढीठताई के** कारण, इनके **आह्लादमयी, रहस्यमयी, विस्मादमयी–**

रंग
रस
चाव

से वंचित व दूर होते जा रहे हैं।

3. दिमागी शक्ति के करिश्मे–ईश्वर ने मनुष्य को अनंत शक्ति प्रदान की है जिसके द्वारा मनुष्य नित्य नवीन वैज्ञानिक अविष्कार कर रहा है तथा आश्चर्यचकित करने वाले करिश्मे नित्य–प्रति देखने या सुनने में आ रहे हैं।

1. अंतरिक्ष में यात्रा कर रहे हैं।

2. चन्द्रमा पर पहुंच चुके हैं।

3. आकाश – पाताल के गुप्त भेदों की खोज कर रहे हैं।

4. देश – विदेश में बैठे बातचीत कर रहे हैं।

5. सूक्ष्म व पेचीदा दिमागी काम कम्प्यूटर से करवा रहे हैं।

6. प्रकृति के गहन खोज द्वारा, प्रकृति को **बदलने** का प्रयास कर रहे हैं।

7. अपने सुख और स्वार्थ के लिए अनेक नवीन 'साधन' बना लिए हैं।

8. शत्रु को तबाह करने के लिए नए – नए अत्यंत **'घातक' हथियार** (Destructive weapons i.e. missiles, chemical war-heads etc.) बना लिए हैं।

उपरोक्त वर्णित वैज्ञानिक अविष्कारों तथा अन्य अनेक वैज्ञानिक खोजों के **परिणाम**, अत्यन्त अचम्भित करने वाले दिमागी करिश्में या करामात हैं। परन्तु इन करिश्मों ने जहां हमें अत्यंत सुख तथा लाभ पहुचाएं हैं, वहाँ यह बहुत **दुख और अत्याचार का कारण भी बने हैं।**

पदार्थिक ज्ञान के विकास में हम इतने **व्यस्त व 'खोए'** हुए हैं कि हम अपने केन्द्र अपने आपे को ही भूल गए हैं। दूसरे शब्दों में हम बाहर – मुखी अचम्भित करने वाले **करिश्मों की 'खोज', आत्मिक खोज की 'कीमत' पर कर रहे हैं।**

यद्यपि हम अपनी तीक्ष्ण बुद्धि द्वारा अत्यधिक आश्चर्यजनक करामातों की **'रचना'** करके **अभिमान में 'फूले नहीं समाते'** परन्तु त्रि – गुणी माया की 'मन – मोहक' **'प्राप्ति' के क्षण – भंगुर रस तथा सुख में,** सदैवीय, अविनाशी, प्रीत – प्रेम, प्यार, रस, चाव, शान्ति की **इलाही 'विरासत' को पूर्णतया भूल गए हैं या लापरवाह हो गए हैं।**

4. **मानसिक शक्ति के करिश्में** – विज्ञान द्वारा सिद्ध हो गया है कि यह संसार इलाही 'कवाउ' से उत्पन्न हुआ है और चल रहा है। इसका तात्पर्य यह है कि **'ख्याल'** या **'संकल्प'** ही **'मूल बीज'** है। ख्यालों के तीव्र, तीक्ष्ण तथा एकाग्र होने से, इन ख्यालों में 'शक्ति' उत्पन्न होती है और बढ़ती है, जिसे **'मानसिक शक्ति'** कहा जा सकता है।

सूर्य की किरणें जब उत्तल ताल (convex lens) के टुकड़े पर पड़ कर उसके पार गुजरती हैं तो वे लाखों किरणें **इकट्ठी और एकाग्र होकर, एक अत्यंत शकितशाली किरण** का रूप धारण कर लेती हैं। इस शक्तिशाली किरण (condensed ray) में, सूर्य की गर्मी की तीक्ष्णता इतनी बढ़ जाती है कि वह कागज को जला देती है, जबकि सूर्य की साधारण किरणों का कागज पर कोई असर नहीं होता।

यह दृष्टांत हमारे ख्यालों की किरणों या वृत्तियों पर सही उतरता है। ज्यों-ज्यों हमारे ख्यालों की वृत्तियां **एकत्रित एवं एकाग्र होती जाती हैं,** त्यों-त्यों इनकी **शक्ति बढ़ती जाती है।**

इस मानसिक शक्ति (mind power) को भली प्रकार स्पष्ट करने के लिए कुछ उदाहरण दिये जाते हैं-

1. 'नज़र लगनी'-यह बात आम मानी जाती है कि 'तीव्र-जलन' (intense jealousy) या अन्य तुच्छ विचारों की तीव्रता द्वारा 'नज़र' लग जाती है। इन तुच्छ विचारों की एकाग्रता तथा अभ्यास द्वारा उत्पन्न शक्ति के प्रकटाव को 'नज़र' या 'श्राप' कहा जाता है। यदि तुच्छ विचारों में से उत्पन्न मानसिक शक्ति के करिश्मों को साधारण माना जा सकता है तो उत्तम या दैवीय ख्यालों की एकाग्रता से उत्पन्न करिश्में 'वर', करामात, रिद्धियां-सिद्धियां भी साधारण ही समझने योग्य हैं, क्योंकि यह सारे करिश्में केवल मन की एकाग्रता या ख्यालों की तीक्ष्णता के ही 'परिणाम' हैं।

2. स्वामी विवेकानन्द ने इस मानसिक शक्ति (mind power) के सम्बन्ध में, अमरीका में दिये गए एक व्याख्यान में बहुत सुन्दर प्रकाश डाला है।

जब वह कालज में पढ़ते थे, कुछ अन्य मनचले विद्यार्थियों को साथ लेकर दक्षिण भारत में किसी ब्राह्मण के पास गए, जिसके विषय में उन्होंने सुन रखा था कि वह बड़ी अनोखी करामातें दिखाता है। उन्होने उसे कोई करामात दिखाने को कहा। उस ब्राह्मण ने कहा कि आप अपने-अपने मनभावन 'फल' का गुप्त ध्यान या चिंतन करें तथा कागज पर उस फल का नाम लिखकर उसे अपनी-अपनी जेब में डाल लें। फिर उन्हें आँखें बंद करके बैठने को कहा तथा खुद भी समाधि लगाकर बैठ गया। कुछ समय उपरांत आँखें खोलने को कहा, तब वह विद्यार्थी यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि उनके सामने कई प्रकार के 'फलों' का ढेर लगा हुआ था। ब्राह्मण ने कहा कि अब आप अपने चिन्तन किये हुए फल चुन कर खा लो, परन्तु विद्यार्थी 'जादू के फल' खाने से झिझक रहे थे। ब्राह्मण ने स्वयं फल खाकर उनकी तसल्ली करवाई कि यह प्राकृतिक ताजे फल हैं तथा हानिकारक नहीं हैं।

जब विद्यार्थियों ने वह फल खाए तो उनमें कुदरती महक, स्वाद तथा रस भरा हुआ था। विद्यार्थियों ने जब यह देखा कि फल विदेशी थे और उस ऋतु के भी नहीं थे और बिलकुल ताजे हरी पत्तियों और टहनियों सहित थे तो उनका आश्चर्य और भी बढ़ गया। ब्राह्मण ने उन्हें समझाया कि यह कोई धार्मिक या आत्मिक करामात नहीं है अपितु यह तो मात्र मानसिक एकाग्रता का परिणाम है। उसने बताया कि उसे मन एकाग्र करने की यह कला एक रमते साधु ने सिखाई थी। वह स्वयं तो साधारण गृहस्थी है, साधु, संत या भक्त नहीं।

विवेक बुद्धि के अभाव के कारण हम इन अचम्भित करने वाले करिश्मों के 'गुप्त' भेदों को समझने में असमर्थ हैं तथा प्रत्येक असाधारण, विलक्षण, अप्राकृतिक चमत्कार को धार्मिक या आत्मिक रंग चढ़ा देते हैं। इस प्रकार यह अचम्भित करने वाले चमत्कार या करामात हमारे लिए धार्मिक या आत्मिक अवस्था के 'माप–दंड' या 'कसौटी' बन गए हैं। जितने ज्यादा करिश्में कोई दिखाता है उतने ही हम धार्मिक रूप में प्रभावित होकर उसे महापुरुष या भक्त मान लेते हैं, तथा अपनी स्वार्थ पूर्ती के लिए उसकी पूजा शुरू कर देते हैं।

वास्तव में यह अचम्भित करने वाले चमत्कार या करामात मात्र ख्यालों की एकाग्रता से उत्पन्न मानसिक शक्ति का प्रकटाव ही हैं।

सारी सृष्टि, दैवीय 'कवाउ' द्वारा इलाही 'जीवन–रौं' में से उत्पन्न हुई है और चल रही है। जब हम एकाग्र हुए मन की शक्ति का प्रयोग मनो–कल्पित स्वार्थ के लिए करते हैं तो हम प्रकृति में प्रवाहित इलाही 'जीवन–रौं' के 'प्रवाह' में 'विघ्न' डाल देते हैं, जो 'अप्राकृतिक', 'हानिकारक' तथा 'ईश्वरीय रज़ा' के 'विपरीत' है।

दूसरे शब्दों में हमने अपनी अज्ञानता द्वारा इन करामातों या रिद्धियों–सिद्धियों को–

1. धार्मिक **रंगत चढ़ा दी है।**
2. **आत्मिक दर्जा** दिया हुआ है।
3. धार्मिक या आत्मिक अवस्था की झूठी **'कसौटी'** बनाई हुई है।
4. अपने मायिकी या धार्मिक स्वार्थ के लिए **प्रयोग करते** है।
5. अपनी प्रसिद्धि या प्रभुत्व के लिये **विज्ञापन का माध्यम** बना दिया है।
6. धार्मिक या आत्मिक जिज्ञासा का **अंत या मंज़िल समझे हुए हैं।**

7. अपने 'अहम्' के फलने फूलने का **'आहार' बना लिया है।**

8. **चेले बनाने और बढ़ाने** का **विशेष 'साधन'** बना लिया है।

9. अपने **ठाठ–बाठ** तथा प्रभुत्व के लिए **सरल तथा प्रभावशाली 'माध्यम' बना लिया है।**

भली प्रकार याद रखने वाली बात यह है कि यह सब अचम्भित करने वाले करिश्में, नाटक–चेटक, रिद्धियां–सिद्धियां, **करामात, त्रि–गुणी मायिकी मंडल** में **'अहम्' का ही 'खेल–अखाड़ा'** तथा **'कूर–क्रिया'** है, जो कि **परमार्थ तथा आत्मिक जिज्ञासा के मार्ग में सबल रुकावट हैं।**

गुरबाणी में हमारी इस अवस्था का नक्शा यूँ खींचा गया है–

बिनु नावै पैनणु खाणु सभु बादि है धिगु सिधी धिगु करमाति।।
सा सिधि सा करमाति है अचिंतु करे जिसु दाति।।
नानक गुरमुखि हरि नामु मनि वसै
एहा सिधि एहा करमाति।। (पृ. ६५०)

रिधि सिधि सभु मोहु है नामु न वसै मनि आइ।। (पृ. ५९३)

इतिहास में रिद्धि, सिद्धि, करामातों के कई **'पहलवान'** हो चुके हैं, जैसे 'गोरखनाथ', 'नूर शाह', 'वली कंधारी', 'मियां मिट्ठा', 'भंगरनाद' आदि।

इसी **मानसिक शक्ति** की **श्रेणी में** कई मानसिक **'करतब' प्रचलित हैं, जैसे–**

रिद्धि–सिद्धि
नाटक–चेटक
तांत्रिक जादू
करामात
वाक्–सिद्धि
भविष्यवाणी
अन्तरयामिता
भूतों का जादू
मदारियों के तमाशे, आदि।

5. **आत्मिक शक्ति के करिश्मेः–** इस लेख के पिछले भाग में त्रिगुणी मायिकी मंडल की शक्तियों के प्रकटाव द्वारा अचम्भित करने वाले करिश्मे अथवा चमत्कारों के विषय में विचार किया जा चुका है।

यह बात भली भांति दृढ़ करने योग्य है कि इलाही **'खेल'** में **दो भिन्न–भिन्न मंडल हैं–**

1. त्रिगुणी **मायिकी मंडल**: जिसमें **'अहम्' का खेल अखाड़ा है।**

2. **आत्मिक मंडल**: जिसमें **इलाही 'हुकुम' का खेल प्रवृत्त है।**

अब हम आत्मिक मंडल के इलाही 'करामातया कौतुकों' पर विचार करें, जिनका आत्मिक जिज्ञासुओं, भक्तों, महा–पुरुषों, गुरमुखों द्वारा **सहज–स्वभाव 'प्रकटाव' होता रहता है।**

जब आत्मिक जिज्ञासु, अर्न्तमुख होकर, सिमरन द्वारा, अपने हृदय के **'स्त्रोत' में 'डुबकी' लगाते हैं** तब उनकी **'सुरति'** 'आत्मा प्रकाश' शबद को जा छूती है, तथा बिजली के करंट की भांति, शरीर में 'शबद' के **'इलाही करंट'** की **रून–झुन छिड़ जाती है,** और ओत–प्रोत, **'अंग–संग, मौला'** प्रतीत होती है। इस प्रकार जीव का 'उप–मन' **'नाम' के 'झूले' पर झूलता हुआ** किसी अगम्य **प्रीत–प्रेम, रस, रंग** के **अकथनीय स्वाद में विस्मादित होकर इलाही आह्वाद के चाव और खुशी में, कह उठता है–**

सुनहु लोका मै प्रेम रसु पाइआ।। (पृ. ३७०)

अहिनिसि बनी प्रेम लिव लागी सबदु अनाहद गहिआ।। (पृ. ३६०)

खूबु खूबु खूबु खूबु खूबु तेरो नामु।।
झूठु झूठु झूठु झूठु दुनी गुमानु।। (पृ. ११३८)

देखहु अचरजु भइआ।।
जिह ठाकुर कउ सुनत अगाधि बोधि सो रिदै गुरि दइआ।। (पृ. ६१२)

हमारी सुरति जब इस आत्मिक शक्ति के **'स्त्रोत'** को **'छूती'** है तो बिजली के करंट की भांति, हमारे अन्दर **अनन्त दैवीय शक्ति भर जाती है।** इस प्रकार गुरमुख–जन, **दैवीय शक्ति** से **परिपूर्ण** हो जाते हैं, तथा उन्हें अनुभव द्वारा प्रतीत होता है, कि सृष्टि के कण–कण में इलाही **'जीवन–रौं'** ओत–प्रोत हो कर इलाही **'हुकुम' की 'रवानगी' में चल रही है,** जिसमें 'जीव' **सिर्फ दैवीय 'हुकुम' की 'प्रणाली' का एक नन्हा सा 'अंश' ही है।**

अनुभवी आत्मिक ज्ञान के **प्रकाश में** जिज्ञासु का **'भ्रम–गढ़' टूट जाता है,** तथा उसे **अन्तर–आत्मा में प्रतीत हो जाता है** कि उसका **अपने आप में, कोई 'अस्तित्व' नहीं है।** सब कुछ ईश्वर **'आप–ही–आप' है:–**

हम किछु नाही एकै ओही।। (पृ. ३९१)

किस नो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि।। (पृ. ४७५)

मै नाही कछु हउ नही किछु आहि न मोरा।। (पृ. ८५८)

मै नाही प्रभ सभु किछु तेरा।। (पृ. ८२७)

बख्शे हुए महा–पुरुष, गुरमुख जनों को यह **निश्चय** हो जाता है कि वह तो **सिर्फ** 'हड्डी–मास–नाड़ी के पिंजर' ही हैं, जिसमें **'ईश्वर' स्वयं अपने 'हुकुम' द्वारा प्रवृत्त है।** हम तो इस अपार **'हुकुम'** में केवल **एक 'कठ–पुतली' ही हैं।**

कबीर ना हम कीआ न करहिगे ना करि सकै सरीरु।।
किआ जानउ किछु हरि कीआ भइओ कबीरु कबीरु।। (पृ. १३६७)

काठ की पुतरी कहा करै बपुरी खिलावनहारो जानै।। (पृ. २०६)

गुरमुख जन ईश्वर द्वारा प्रदान की हुई अनन्त आत्मिक शक्ति का प्रयोग ईश्वर की रज़ा में करता है तथा इसे **अपनी मन–मर्जी द्वारा प्रयोग करने से संकोच करता है।**

मेरा कीआ कछू न होइ।। करि है रामु होइ है सोइ।। (पृ. ११६५)

जहां त्रिगुणी मायिकी मंडल में जीव अत्यंत **साधना द्वारा** मानसिक शक्ति प्राप्त करता है तथा उस शक्ति को **अपनी 'प्राप्ति' और 'सम्पति' समझ कर प्रयोग करता है।**

वहां आत्मिक मंडल में गुरमुख जन, दैवीय आत्मिक शक्ति को **'इलाही–दात'** समझ कर **ईश्वरीय 'रज़ा' में प्रयोग करता है।**

जिस प्रकार, ईश्वरीय हुकुम अनुसार, प्रकृति का कण–कण, भिन्न–भिन्न रंग–रूप–आकारों में, विभिन्न तरीकों से, अनन्त तथा आश्चर्यजनक इलाही कौतुक व **करामातों के प्रकटाव में, हिस्सा दे रहा है।**

उसी प्रकार गुरमुख जन भी, आश्चर्यजनक इलाही कौतुक व करामातों से परिपूर्ण **'कुदरत' में दैवीय 'हुकुम' अनुसार अपना हिस्सा दे रहे हैं।**

इन परिस्थितियों में **अन्तर** केवल इलाही **'हुकुम' के प्रकटाव के पीछे, 'भावना' का है।**

चौरासी लाख योनियां तो प्रकृति के दैवीय कौतुकों में, **भोलेपन तथा अनजाने ही हिस्सा** ले रही हैं।

साधारण मनुष्य, अपनी 'मैं-मेरी' के प्रकटाव के लिए, हिस्सा ले रहे हैं। परन्तु गुरमुख जन, पूर्ण ज्ञान में, 'बै खरीद गोले' बनकर, इलाही आश्चर्यजनक, करामातों के प्रदर्शन के लिए, अपने 'अस्तित्व' को ईश्वरीय 'हथियार' की दैवीय 'भावना' से प्रयोग करते हैं।

इन दोनों शक्तियों के प्रदर्शन की पहचान इस प्रकार हो सकती है-

	मानसिक शक्ति	आत्मिक शक्ति
1.	साधना द्वारा प्राप्त होती है।	इलाही **'दात'** है।
2.	**'सीमित'** है।	**अगम्य और अपार है।**
3.	**स्वार्थी** है।	**पर-उपकारी** है।
4.	'अहम्' को **फूंक देते** है।	अहम् का **अभाव** है।
5.	**'मैं-मेरी'** का खेल अखाड़ा है।	**'तूं-तेरी'** का 'खेल' है।
6.	**अपनी मर्जी से** प्रयोग की जाती है।	**इलाही 'हुकुम'** में प्रयोग की जाती है।
7.	**'बंधन'** रूप है।	**'बंधन-तोड़'** है।
8.	आत्म मार्ग में **रुकावट** है।	आत्मिक जिज्ञासा में **'सहायक'** है।
9.	**'अवरा' स्वाद व 'धिक्कार योग्य' है।**	इलाही **'रंग-रस'** है।
10.	दैवीय हुकुम में **'विघ्न'** डालना है।	दैवीय हुकुम का **'पालन'** है।
11.	दैवीय रज़ा से **'बेसुर'** होना है।	**दैवीय रज़ा में 'सुर' होना है।**
12.	जीव की प्राप्ति प **सम्पत्ति** है।	**'जीव'** स्वयं इस शक्ति का **'बै-खरीद' गोला** बन जाता है।
13.	रूखी सूखी फोकट **क्रिया है।**	प्रीत, प्रेम, प्यार, रस चाव **का 'स्त्रोत' है।**
14.	ईर्ष्या, द्वेष, जलन, वैर-विरोध का **कारण** है।	**'सगल संगि हम कउ बनि आई' है।**
15.	**'द्वैत भाव'** है।	**'तूं ही तूं'** है।
16.	अपने आप में कोई **'हस्ती'** नहीं, अपितु इलाही शक्ति का ही **अक्स है।**	अथाह, अगम्य, सदैवीय **रुन-झुन लगाने वाली गर्जती-बरसती इलाही शक्ति है।**

इस **'उल्टी प्रिम खेल'** को कोई विरला गुरमुख ही अनुभव द्वारा समझ, बूझ कर आनंद उठाता है।

हम इन रिद्धि – सिद्धि, करामातों से इतने **प्रभावित और 'कायल'** हो गए हैं कि यह मानसिक **'करिश्मे'** ही हमारा **'परमार्थ'** बन गए हैं। इन करिश्मों की शक्ति ही हमारे लिए **धार्मिक 'माप – दण्ड' या 'कसौटी'** है, जिसके द्वारा हम किसी साधू, संत, फकीर, देवी – देवता, गुरमुख या गुरू को **'परखते'** हैं। जब हम इन करामातों की **मनोकल्पित कसौटी पर गुरू साहिब को परखते हैं,** तो उनकी अपर – अपार **महानता** को भी, **अपनी बुद्धि की 'सीमा' तक सीमित कर देते हैं।** इस प्रकार जब हम गुरू साहिब को, अपनी स्वार्थी बुद्धि की मैली और **'धुंधली कसौटी' पर परखते हैं** तो अपनी अज्ञानता द्वारा, गुरू साहिब का **आदर तथा सत्कार करने की अपेक्षा,** अनजाने ही **'निरादर'** कर देते हैं। गुरुपर्वों पर तिथियां, वंशावली तथा सुनी – सुनाई कुछ करामातों का ही **वर्णन** कर देते हैं, क्योंकि हम गुरू साहिब के वास्तविक **असीम इलाही गुणों से अनजान हैं।** यह **मायिकी – मंडल के 'कौतुक'** तो गुरू साहिब के इलाही जीवन के, **गिने – चुने** बाहरमुखी **'प्रकटाव'** ही है।

गुरू साहिब के इलाही जीवन के असीम **आत्मिक गुणों की महानता** के विषय में हमें –

पता ही नहीं
समझ ही नहीं
ज्ञान ही नहीं
अनुभव ही नहीं
आनंद उठाने के लिए सूक्ष्म हृदय ही नहीं
'दात' के लिए 'पात्र' ही नहीं।

सतिगुरू स्वयं ही –

'आश्चर्य' रूप हैं
'विस्माद' रूप हैं
'आनंद – विनोदी' हैं
'प्रेम – पुरुष' हैं
'वाहु – वाहु' हैं

तथा सूर्य की किरणों की भाँति उनका – इलाही प्रकाश, 'नदरि करम', 'बख्शिश',

‘गुर प्रसाद’ **द्वारा**, इलाही **‘किरणों’** (Divine Rays) का – हर – क्षण, पल – पल, प्रति – क्षण, युगों – युग सदैवीय **प्रकाश होता रहता है।**

इन गुप्त, अन्तर – आत्मिक, **इलाही किरणों की –**

आश्चर्यजनक **‘कला’**
विस्मादमयी **‘कौतुक’**
नित्य नवीन **‘अचम्भें’**
इलाही **‘वाणी’**
‘प्रेम – वाणी’
‘नाम – किरणें’
‘वाहु – वाहु’ के बीच

द्वारा अनगिनत अभिलाषी श्रद्धालु जिज्ञासुओं की **रूहों को –**

‘आत्मिक – जीवन’
‘प्रिम – प्याला’
‘अमृत – भोजन’
‘नाम – दान’
‘प्रिम – रस’

प्रदान होता रहता है।

हां जी! इलाही **‘करामात’ द्वारा** – हमारे जीवन में निम्नलिखित **परिवर्तन** आने चाहिए –

‘पसू प्रेत’	**से**	**‘मानुरव कीऐ’**
‘मनुष्य’	**से**	**‘देवता’**
‘देवता’	**से**	**‘ब्रह्मज्ञानी’**
‘मनमुरव’	**से**	**‘गुरमुरव’**
‘साकत’	**से**	**‘सेवक’**
‘माया मंडल’	**से**	**‘आत्म – मंडल’**
‘दिमागी ज्ञान’	**से**	**‘ब्रह्म ज्ञान’**
‘मायिकी भ्रम’	**से**	**‘अनुभवी आत्मिक सूझ’**

'अग्नि – शोक – सागर'	से	'आत्मिक शीतलता'
'भय'	से	'निर्भय'
'काल'	से	'अकाल'
'कूड़'	से	'सत्'
'मैं – मेरी'	से	'तूं – तेरी'
'अहंकार'	से	'नम्रता'
'मलिन'	से	'निर्मल'
'सूरवे'	से	'हरे'
'दुरव क्लेश'	से	'अविनाशी रवेम'
'चिंता – चिता'	से	'सदा मन चाव'
'स्वार्थी'	से	'परोपकारी'
'झूठे रस'	से	'महारस'
'घृणा'	से	'प्रेम'
'बुरे'	से	'भले'

वास्तव में जीव के **बाहरमुरवी मायिकी जीवन को उल्टाकर, अन्तमुरवी आत्मिक जीवन** में **परिवतित करना ही,** सबसे महत्वपूर्ण, सच्ची – अटल **इलाही करामात है, अचम्भा है, जादू है।**

जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार।। (पृ. ४६२)

सा सिधि सा करामाति है अचिंतु करे जिसु दाति।।
नानक गुरमुखि हरि नामु मनि वसै एहा सिधि एहा करमाति।। (पृ. ६५०)

यदि हमारे मायिकी मंडल के मानसिक जीवन में, उपरोक्त वर्णित **परिवर्तन नहीं आते तो यह सब बाहर – मुरवी रिद्धि – सिद्धि, करामातें,** नाटक – चेटक, जादू टोने निष्फल, **फोकट, निर्मूल, हानिकारक 'भ्रम – भुलाव' ही हैं।** जिनके क्षण – भंगुर **मिथ्या चमत्कारों,** 'रिधि सिधि अवरा साद' में ही हम **गलतान** होकर 'फंसे' हुए हैं।

बिनु नावै पैनणु रवाणु सभु बादि है धिगु सिधी धिगु करमाति।। (पृ. ६५०)

प्रकृति के–

‘कवाओ’ की रचना,
रचना की बनावट,
बनावट में भिन्नता
भिन्नता में रंगत,
रंगत में कोमलता,
कोमलता में सौन्दर्य,
सौन्दर्य में ‘आकर्षण’
‘आकर्षण’ में ‘नशा’,
‘नशे’ में मस्ती,
मस्ती में चाव,
चाव में नूर,
नूर में आश्चर्य,
आश्चर्य में ‘वाहु–वाहु’

तथा, इस ‘वाहु–वाहु’ द्वारा–

अमृत का ‘रिम–झिम’ बरसना,
शबद का ‘गर्जना’,
नाम की ‘रुन–झुन’
‘प्रिम–प्याले’ की मस्ती,
मस्ती का ‘सहज’
‘गुर प्रसाद’

आदि अनेक **‘आत्मिक बख्शिशों’ के करिश्मे भी** इलाही कृपा या **ईश्वरीय ‘करामात’ के ‘प्रतीक’** हैं।

इसी प्रकार बाहरमुखी कुदरत में–

पौ–फटना,
सूर्य की गति,
सूर्य की लाली,

सूर्य का अस्त होना,
रात्रि का अन्धकार,
हवा की ‘सां–सां’ में,
जल के नाद में,
चिड़ियों की ‘चूं–चूं’ में,
बच्चे के ‘रुदन’ में,
खुशी की ‘किलकारियों’ में,
‘किलकारियों’ के ‘प्रकटाव’ में,
जीवन की ‘रवानगी’ में,
रवानगी के ‘यौवन’ में,
यौवन की मस्ती में
मस्ती के ‘नशे’ में,
नयनों की ‘नज़र’ में,
नज़र के ‘कटाक्ष’ में,
प्रकृति के ‘सौन्दर्य’ में,
सौन्दर्य की ‘कोमलता’ में,
कोमलता की ‘नज़ाकत’ में,
नज़ाकत की ‘अदा’ में,
अदा के ‘जादू’ में,
फूल की ‘रंगत’ में,
फूल के ‘खिड़ाव’ में,
फूल की ‘कोमलता’ में,
फूल की ‘सुगन्ध’ आदि,

अनेक प्राकृतिक करिश्मों में भी, इलाही ‘करामात’ का ही, अक्स तथा प्रकटाव है।

आपे हरि इक रंगु है आपे बहु रंगी।।
जो तिसु भावै नानका साई गल चंगी।। (पृ. ७२६)

आपे रसीआ आपि रसु आपे रावणहारु।।
आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतारु।।
रंगि रता मेरा साहिबु रवि रहिआ भरपूरि।।रहाउ।।
आपे माछी मछुली आपे पाणी जालु।।
आपे जाल मणकड़ा आपे अंदरि लालु।।
आपे बहु बिधि रंगुला सखीए मेरा लालु।।
नित रवै सोहागणी देखु हमारा हालु।।
प्रणवै नानकु बेनती तू सरवरु तू हंसु।।
कउलु तू है कवीआ तू है आपे वेखि विगसु।। (पृ. २३)

(क्रमशः)